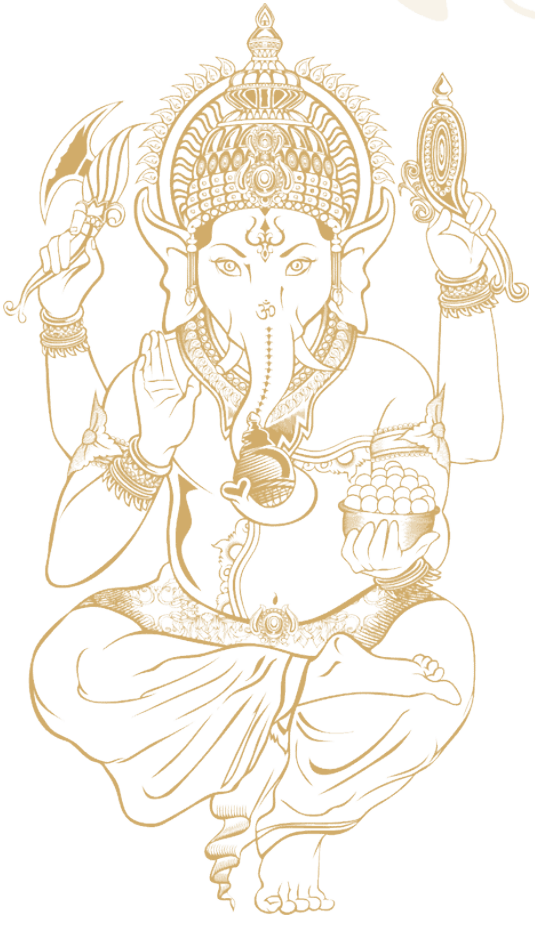

NEERAJ KUMAR

04 May 1986

06:56 PM

Barka Kana

Model: Web-MyKundli

Order No: 121496701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**04/05/1986**
दिन	रविवार
जन्म समय	**18:56:00 घंटे**
इष्ट	34:17:50 घटी
स्थान	**Barka Kana**
देश	India

अक्षांश	23:37:00 उत्तर
रेखांश	85:29:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:11:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:07:56 घंटे
वेलान्तर	00:03:12 घंटे
साम्पातिक काल	09:56:29 घंटे
सूर्योदय	05:12:52 घंटे
सूर्यास्त	18:17:18 घंटे
दिनमान	13:04:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	20:07:19 मेष
लग्न के अंश	29:25:04 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**पू०भाद्रपद - 4**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	वैधृति
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दी-दीपांकर
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	वैशाख	14
पंजाबी	संवत : 2043	वैशाख	22
बंगाली	सन् : 1393	वैशाख	20
तमिल	संवत : 2043	चिथिराई	21
केरल	कोल्लम : 1161	मेदम	21
नेपाली	संवत : 2043	वैशाख	21
चैत्रादि	संवत : 2043	वैशाख	कृष्ण 11
कार्तिकादि	संवत : 2043	चैत्र	कृष्ण 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 20:31:44
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 22:43:50 घंटे
जन्म योग _____: पू०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 10:24:38 घंटे
जन्म योग _____: वैधृति
सूर्योदय कालीन करण _____: बव
करण समाप्ति काल _____: 08:07:23 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 53:52:51
भभोग _____: 63:22:26
भोग्य दशा काल _____: गुरु 2 वर्ष 4 मा 15 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

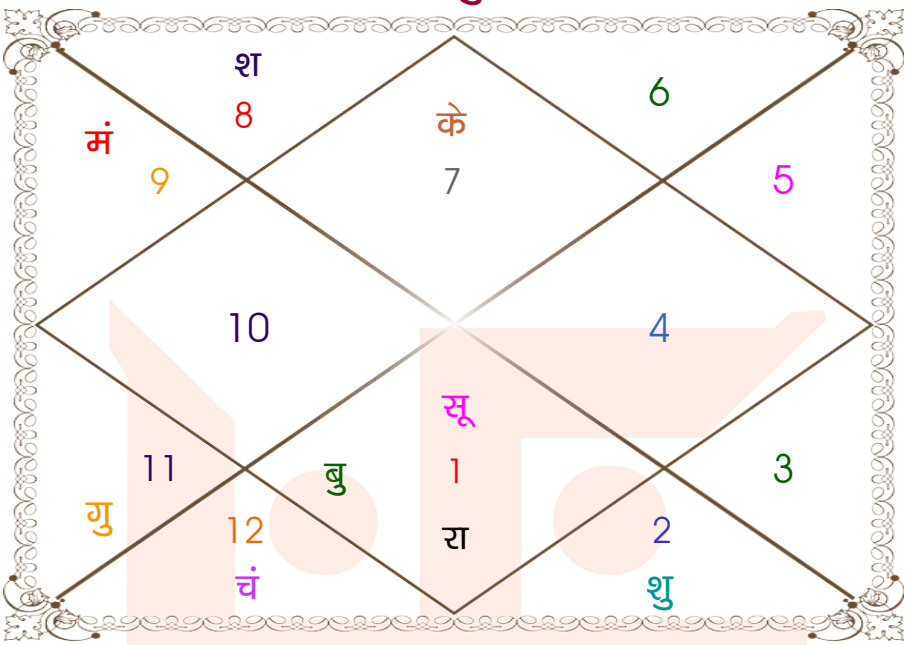

चन्द्र कुंडली

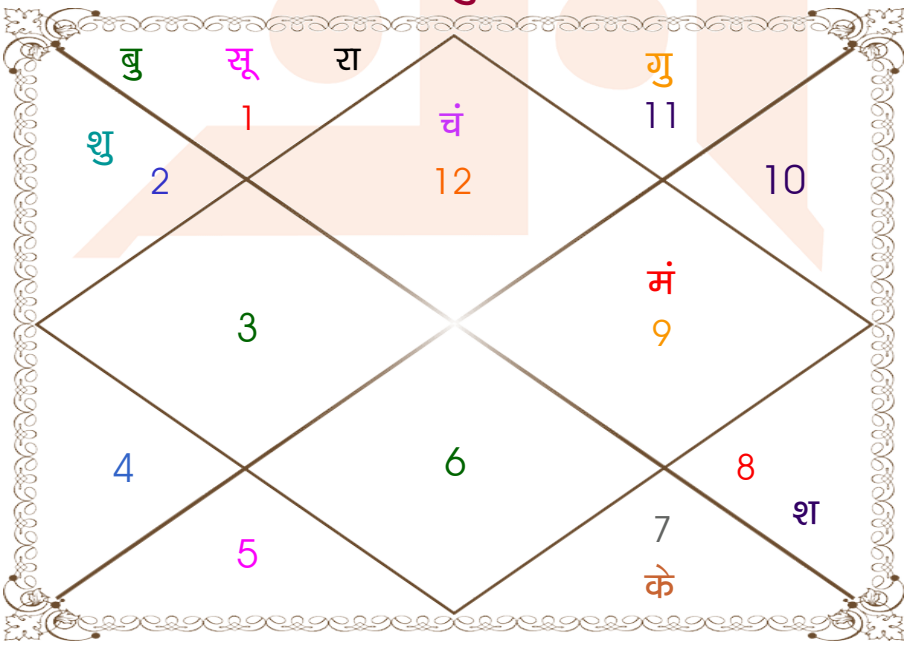

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

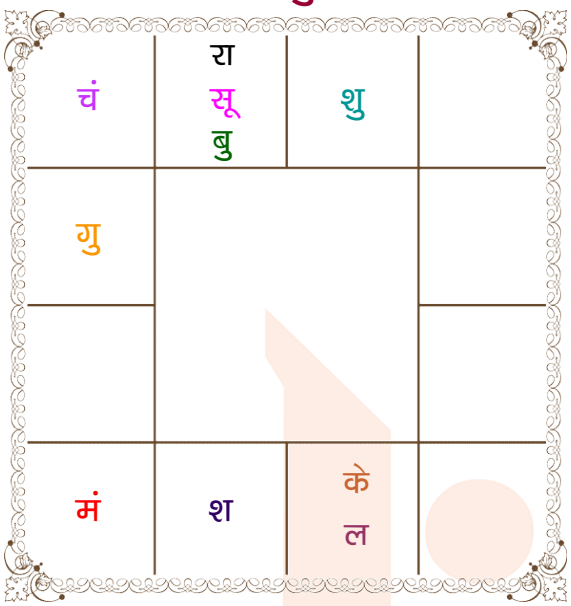

लग्न कुंडली

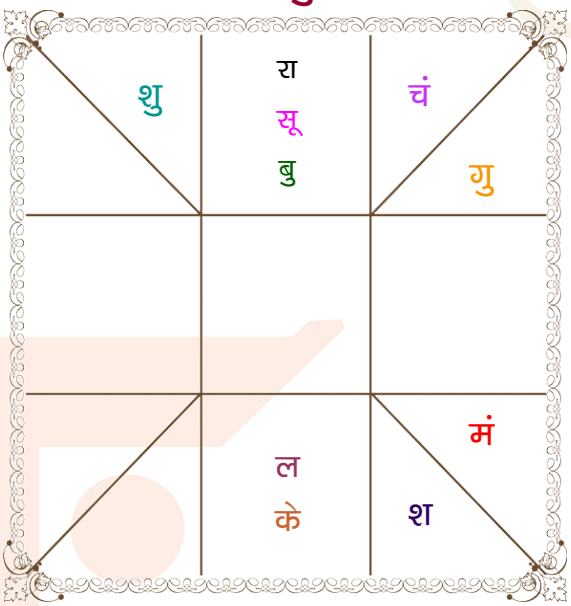

विंशोत्तरी
गुरु 2वर्ष 4मा 15दि

गुरु	
04/05/1986	
18/09/2092	
गुरु	18/09/1988
शनि	19/09/2007
बुध	18/09/2024
केतु	19/09/2031
शुक्र	19/09/2051
सूर्य	18/09/2057
चन्द्र	19/09/2067
मंगल	18/09/2074
राहु	18/09/2092

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 7मा 3दि

भद्रिका	
07/12/2022	
07/12/2027	
भद्रिका	18/08/2023
उल्का	17/06/2024
सिद्धा	07/06/2025
संकटा	18/07/2026
मंगला	07/09/2026
पिंगला	17/12/2026
धान्या	19/05/2027
भ्रामरी	07/12/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	29:25:04	315:19:45	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	---
सूर्य			मेष	20:07:19	00:58:10	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	उच्च राशि
चंद्र			मीन	01:21:14	12:31:46	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
मंगल			धनु	22:41:32	00:20:39	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	मित्र राशि
बुध			मेष	01:05:21	01:43:28	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
गुरु			कुंभ	22:20:12	00:10:44	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	सम राशि
शुक्र			वृष	15:46:48	01:12:52	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	स्वराशि
शनि	व		वृश्चि	14:24:49	00:03:51	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	शत्रु राशि
राहु			मेष	06:18:41	00:01:21	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु			तुला	06:18:41	00:01:21	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	सम राशि
हर्ष	व		वृश्चि	28:07:25	00:01:45	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
नेप	व		धनु	11:57:14	00:00:50	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	12:05:00	00:01:41	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
दशम भाव			सिंह	03:14:22	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	सूर्य	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:49

लग्न-चलित

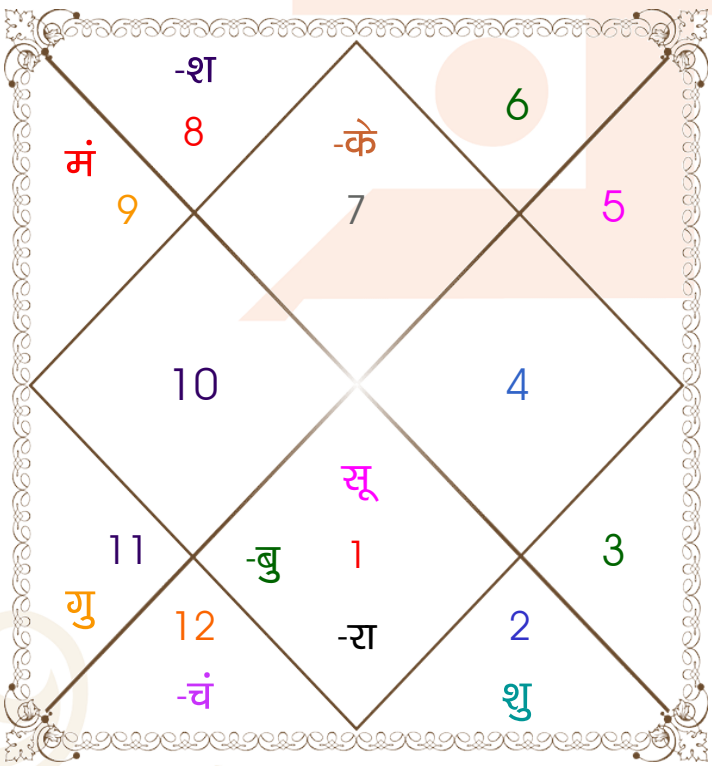

चन्द्र कुंडली

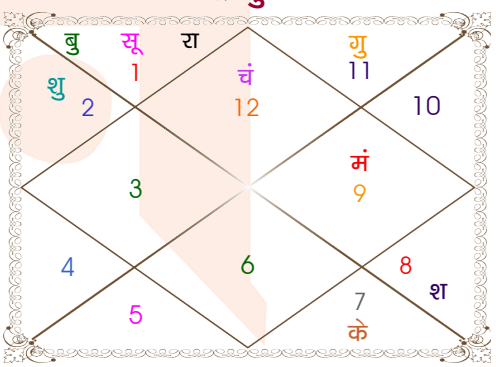

नवमांश कुंडली

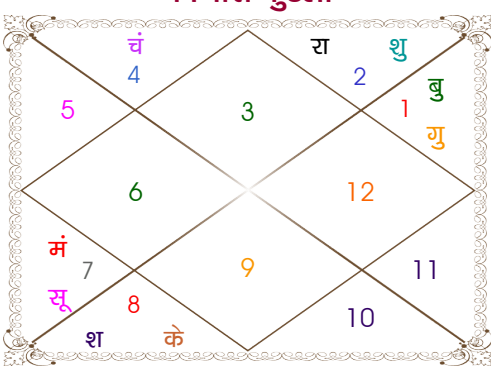

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	15:03:17	तुला	29:25:04
2	वृश्चिक	15:03:17	धनु	00:41:30
3	धनु	16:19:43	मकर	01:57:56
4	मकर	17:36:09	कुम्भ	03:14:22
5	कुम्भ	17:36:09	मीन	01:57:56
6	मीन	16:19:43	मेष	00:41:30
7	मेष	15:03:17	मेष	29:25:04
8	वृष	15:03:17	मिथुन	00:41:30
9	मिथुन	16:19:43	कर्क	01:57:56
10	कर्क	17:36:09	सिंह	03:14:22
11	सिंह	17:36:09	कन्या	01:57:56
12	कन्या	16:19:43	तुला	00:41:30

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	29:25:04
2	वृश्चिक	28:54:14
3	मकर	00:17:50
4	कुम्भ	03:14:22
5	मीन	05:26:04
6	मेष	04:16:37
7	मेष	29:25:04
8	वृष	28:54:14
9	कर्क	00:17:50
10	सिंह	03:14:22
11	कन्या	05:26:04
12	तुला	04:16:37

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली

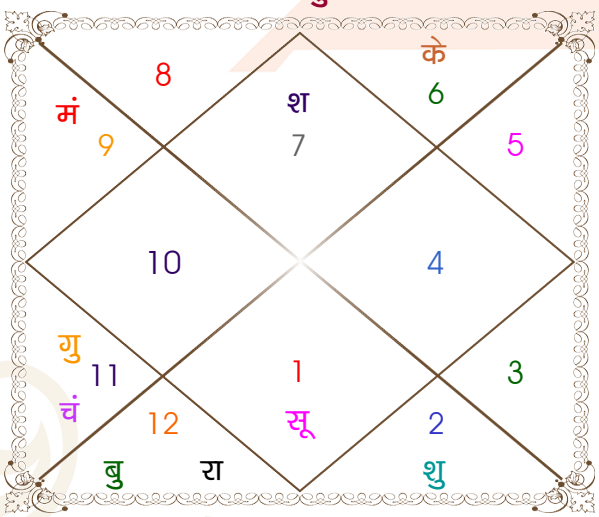

भाव कुंडली

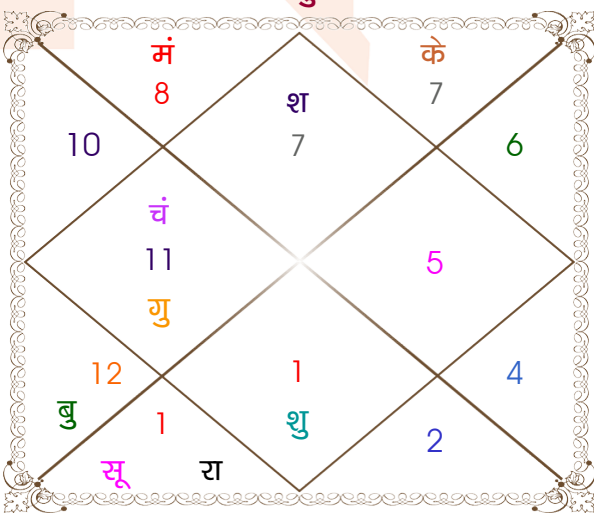

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 2 वर्ष 4 मास 15 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
04/05/1986		18/09/1988		19/09/2007		18/09/2024		19/09/2031	
18/09/1988		19/09/2007		18/09/2024		19/09/2031		19/09/2051	
	00/00/0000	शनि	22/09/1991	बुध	14/02/2010	केतु	14/02/2025	शुक्र	18/01/2035
	00/00/0000	बुध	01/06/1994	केतु	11/02/2011	शुक्र	16/04/2026	सूर्य	18/01/2036
	00/00/0000	केतु	11/07/1995	शुक्र	12/12/2013	सूर्य	22/08/2026	चंद्र	18/09/2037
	00/00/0000	शुक्र	09/09/1998	सूर्य	19/10/2014	चंद्र	23/03/2027	मंगल	18/11/2038
	00/00/0000	सूर्य	22/08/1999	चंद्र	19/03/2016	मंगल	19/08/2027	राहु	18/11/2041
	00/00/0000	चंद्र	23/03/2001	मंगल	16/03/2017	राहु	06/09/2028	गुरु	19/07/2044
	00/00/0000	मंगल	01/05/2002	राहु	04/10/2019	गुरु	13/08/2029	शनि	19/09/2047
	04/05/1986	राहु	07/03/2005	गुरु	09/01/2022	शनि	21/09/2030	बुध	20/07/2050
राहु	18/09/1988	गुरु	19/09/2007	शनि	18/09/2024	बुध	19/09/2031	केतु	19/09/2051

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
19/09/2051		18/09/2057		19/09/2067		18/09/2074		18/09/2092	
18/09/2057		19/09/2067		18/09/2074		18/09/2092		05/05/2106	
सूर्य	06/01/2052	चंद्र	20/07/2058	मंगल	15/02/2068	राहु	01/06/2077	गुरु	06/11/2094
चंद्र	07/07/2052	मंगल	18/02/2059	राहु	04/03/2069	गुरु	25/10/2079	शनि	19/05/2097
मंगल	12/11/2052	राहु	18/08/2060	गुरु	08/02/2070	शनि	31/08/2082	बुध	25/08/2099
राहु	06/10/2053	गुरु	18/12/2061	शनि	20/03/2071	बुध	20/03/2085	केतु	01/08/2100
गुरु	26/07/2054	शनि	20/07/2063	बुध	16/03/2072	केतु	07/04/2086	शुक्र	02/04/2103
शनि	08/07/2055	बुध	18/12/2064	केतु	12/08/2072	शुक्र	07/04/2089	सूर्य	19/01/2104
बुध	13/05/2056	केतु	19/07/2065	शुक्र	12/10/2073	सूर्य	02/03/2090	चंद्र	20/05/2105
केतु	18/09/2056	शुक्र	20/03/2067	सूर्य	17/02/2074	चंद्र	31/08/2091	मंगल	26/04/2106
शुक्र	18/09/2057	सूर्य	19/09/2067	चंद्र	18/09/2074	मंगल	18/09/2092	राहु	05/05/2106

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 2 वर्ष 4 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र	
14/02/2025	
16/04/2026	
शुक्र	26/04/2025
सूर्य	17/05/2025
चंद्र	22/06/2025
मंगल	17/07/2025
राहु	19/09/2025
गुरु	14/11/2025
शनि	21/01/2026
बुध	22/03/2026
केतु	16/04/2026

केतु - सूर्य	
16/04/2026	
22/08/2026	
सूर्य	23/04/2026
चंद्र	03/05/2026
मंगल	11/05/2026
राहु	30/05/2026
गुरु	16/06/2026
शनि	06/07/2026
बुध	24/07/2026
केतु	01/08/2026
शुक्र	22/08/2026

केतु - चंद्र	
22/08/2026	
23/03/2027	
चंद्र	09/09/2026
मंगल	21/09/2026
राहु	23/10/2026
गुरु	21/11/2026
शनि	24/12/2026
बुध	23/01/2027
केतु	05/02/2027
शुक्र	12/03/2027
सूर्य	23/03/2027

केतु - मंगल	
23/03/2027	
19/08/2027	
मंगल	01/04/2027
राहु	23/04/2027
गुरु	13/05/2027
शनि	06/06/2027
बुध	27/06/2027
केतु	05/07/2027
शुक्र	30/07/2027
सूर्य	07/08/2027
चंद्र	19/08/2027

केतु - राहु	
19/08/2027	
06/09/2028	
राहु	16/10/2027
गुरु	06/12/2027
शनि	05/02/2028
बुध	30/03/2028
केतु	21/04/2028
शुक्र	24/06/2028
सूर्य	13/07/2028
चंद्र	14/08/2028
मंगल	06/09/2028

केतु - गुरु	
06/09/2028	
13/08/2029	
गुरु	21/10/2028
शनि	14/12/2028
बुध	31/01/2029
केतु	20/02/2029
शुक्र	18/04/2029
सूर्य	05/05/2029
चंद्र	03/06/2029
मंगल	22/06/2029
राहु	13/08/2029

केतु - शनि	
13/08/2029	
21/09/2030	
शनि	16/10/2029
बुध	12/12/2029
केतु	05/01/2030
शुक्र	13/03/2030
सूर्य	02/04/2030
चंद्र	06/05/2030
मंगल	30/05/2030
राहु	29/07/2030
गुरु	21/09/2030

केतु - बुध	
21/09/2030	
19/09/2031	
बुध	12/11/2030
केतु	03/12/2030
शुक्र	01/02/2031
सूर्य	19/02/2031
चंद्र	22/03/2031
मंगल	12/04/2031
राहु	05/06/2031
गुरु	23/07/2031
शनि	19/09/2031

शुक्र - शुक्र	
19/09/2031	
18/01/2035	
शुक्र	09/04/2032
सूर्य	08/06/2032
चंद्र	18/09/2032
मंगल	28/11/2032
राहु	30/05/2033
गुरु	08/11/2033
शनि	20/05/2034
बुध	08/11/2034
केतु	18/01/2035

शुक्र - सूर्य	
18/01/2035	
18/01/2036	
सूर्य	05/02/2035
चंद्र	08/03/2035
मंगल	29/03/2035
राहु	23/05/2035
गुरु	11/07/2035
शनि	06/09/2035
बुध	28/10/2035
केतु	19/11/2035
शुक्र	18/01/2036

शुक्र - चंद्र	
18/01/2036	
18/09/2037	
चंद्र	09/03/2036
मंगल	14/04/2036
राहु	14/07/2036
गुरु	03/10/2036
शनि	07/01/2037
बुध	04/04/2037
केतु	09/05/2037
शुक्र	19/08/2037
सूर्य	18/09/2037

शुक्र - मंगल	
18/09/2037	
18/11/2038	
मंगल	13/10/2037
राहु	16/12/2037
गुरु	11/02/2038
शनि	19/04/2038
बुध	19/06/2038
केतु	13/07/2038
शुक्र	22/09/2038
सूर्य	14/10/2038
चंद्र	18/11/2038

शुक्र - राहु	
18/11/2038	
18/11/2041	
राहु	02/05/2039
गुरु	25/09/2039
शनि	16/03/2040
बुध	18/08/2040
केतु	21/10/2040
शुक्र	22/04/2041
सूर्य	16/06/2041
चंद्र	15/09/2041
मंगल	18/11/2041

शुक्र - गुरु	
18/11/2041	
19/07/2044	
गुरु	28/03/2042
शनि	29/08/2042
बुध	14/01/2043
केतु	12/03/2043
शुक्र	21/08/2043
सूर्य	09/10/2043
चंद्र	29/12/2043
मंगल	24/02/2044
राहु	19/07/2044

शुक्र - शनि	
19/07/2044	
19/09/2047	
शनि	18/01/2045
बुध	01/07/2045
केतु	06/09/2045
शुक्र	18/03/2046
सूर्य	15/05/2046
चंद्र	19/08/2046
मंगल	26/10/2046
राहु	17/04/2047
गुरु	19/09/2047

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	92%	धन, सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	52%	दम्पति, धनार्जन
पुखराज	गुरु	52%	सन्तति सुख, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	50%	दम्पति, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	47%	रोग, दुर्घटना
हीरा	शुक्र	46%	दुर्घटना, रोग
मूंगा	मंगल	34%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि

रत्न की शुभता

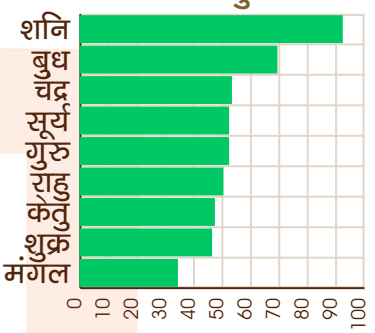

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	18/09/1988	58%	59%	47%	56%	64%	21%	92%	50%	47%
शनि	19/09/2007	28%	31%	9%	75%	52%	54%	100%	56%	22%
बुध	18/09/2024	58%	31%	34%	81%	52%	54%	92%	50%	47%
केतु	19/09/2031	28%	31%	47%	69%	52%	54%	80%	25%	61%
शुक्र	19/09/2051	28%	31%	34%	75%	52%	61%	98%	56%	55%
सूर्य	18/09/2057	64%	59%	47%	69%	58%	21%	80%	25%	22%
चंद्र	19/09/2067	58%	66%	34%	75%	52%	46%	92%	25%	22%
मंगल	18/09/2074	58%	59%	55%	56%	58%	46%	92%	25%	55%
राहु	18/09/2092	28%	31%	9%	69%	52%	54%	98%	62%	22%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराकम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्तिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, कोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(18/09/2024 - 19/09/2031)

केतु की महादशा 18/09/2024 को आरम्भ और 19/09/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु प्रथम भाव में है। केतु की सप्तम भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 17 वर्ष की बुध दशा चल रही थी। बुध के फलस्वरूप आपकी छोटी यात्राएं, कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएँ, विरोधियों पर विजय और संबंधियों से लाभ हुआ होगा। केतु की इस दशा में आपकी आध्यात्मिक विषयों में रुचि होगी, सम्पत्ति मिलेगी और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संक्रामक रोग, फोड़ा-फुंसी, ज्वर, घाव, सरदर्द आदि कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। ये सभी बीमारियाँ मौसम में परिवर्तन के कारण होंगी और दशा में प्रगति के साथ-साथ आपका स्वास्थ्य सुधरेगा। कुछ सावधानियाँ बरत कर आप इनसे बच सकते हैं। अन्यथा आप साहसी और शक्तिशाली होंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक रहेगी। विदेशी सूत्रों तथा व्यापार से धन संग्रह होगा। साझेदारी का कारोबार लाभदायक सिद्ध होगा। किन्तु, कुछ सावधानी बरतनी होगी क्योंकि विरोधी हावी हो सकते हैं। जीविका के रूप में उद्योग, कृषि, चिकित्सा, सर्जरी, भवन निर्माण आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, चमड़ा, मशीनरी, औजार, लोहा और इस्पात का व्यापार अनुकूल होगा। नौकरीपेशा लोगों का परिवर्तन, स्थानान्तरण और कार्य में अप्रत्याशित परिवर्तन होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का स्थान परिवर्तन और कुछ मामूली नुकसान हो सकता है। आपका कर्मचारियों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। दशा में प्रगति के साथ-साथ स्थिति सुधरेगी।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको अचल सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद की प्राप्ति भी होगी। इस पूरी दशा में छोटी यात्रा की सम्भावना है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप कम्प्यूटर की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। आप सभी परीक्षाओं ओर प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। दर्शन शास्त्र और गुप्त विज्ञान तथा इन्जीनियरिंग, विज्ञान, शरीर-विज्ञान, दवा आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आप साहसी तथा आत्मविश्वासी हैं और आपकी शिक्षण-वृत्ति उत्तम होगी।

परिवार :

आपका पारिवारिक जीवन-उत्तम होगा। आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को कुछ बाधाएं, यात्रा और साझेदारों से लाभ हो सकता है। आपको परिवार में मेल-मिलाप बनाये रखने के लिए कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता को यश तथा ख्याति मिलेगी और आध्यात्मिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके पिता को सम्मान की प्राप्ति होगी और यात्रा, कुछ व्यय तथा बच्चों के साथ समस्या होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सुख, सम्पत्ति और विभिन्न स्रोतों से लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को सम्पत्ति और ख्याति मिलेगी तथा उनके शत्रुओं की पराजय होगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की मुख्यदशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति मिलेगी और स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएँ तथा शत्रुओं की पराजय होगी। आगे शुक्र की दशा के दौरान आपको पारिवारिक सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा आपका विवाह होगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सट्टे तथा बच्चों से लाभ होगा और वेदिक अध्ययन-मन्त्र में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान जीवन का आरम्भ और माता से सुख मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी। इसके बाद शनि की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में सफलता मिलेगी तथा उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ मामूली समस्या, विरोधियों पर विजय और संबंधियों से लाभ हो सकता है।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(14/02/2025 - 16/04/2026)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रसिद्ध और सम्मानित होंगे। व्यापार में लाभ होगा, धनी बनेंगे। साझेदार या विरासत के माध्यम से धन और अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उत्तम भोजन का रसास्वादन करेंगे। दान-धर्म के कार्यों में रुचि होगी। आपकी मधुर वाणी से लोग प्रभावित होंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के पास सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी, मित्रों से सहायता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, शत्रुओं पर विजय, लोकप्रियता, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनका जीवन आरामदेह रहेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(16/04/2026 - 22/08/2026)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 16/04/2026 को प्रारंभ होकर 22/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में धनार्जन उत्तम हो सकता है। आपकी इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; समाज में सम्मान मिलेगा। जीवन में प्रगति होगी।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सम्मानित होंगे। आपके पिता थोड़े प्रयास से ही सफलता प्राप्त कर लेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं, घर में सुख-साधन मौजूद रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य, सफलता और धनी होने का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लघु यात्राएं हो सकती हैं, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, लेखन आदि से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय और सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(22/08/2026 - 23/03/2027)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 22/08/2026 से प्रारंभ होकर 23/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से उत्तम संबंध रहेंगे। स्पर्धा में कमी आएगी। आप नेकी के बहुत से कार्य करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं। यात्राएं हो सकती हैं, वातावरण में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। सफलता में बाधा आ सकती है।

आपके जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में रुकावटें आ सकती हैं। आपके पिता सफल और लोकप्रिय होंगे; उनके खर्चे बढ़ सकते हैं। माता की लघु यात्राएं होंगी, वे सफल होंगी, उनकी कला में रुचि हो सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए सुखी जीवन, माता से उत्तम संबंध, परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, वे परीक्षा में सफल रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; पारिवारिक जीवन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अरिष्ट से बचाव के लिए दूध और चावल का दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - मंगल
(23/03/2027 - 19/08/2027)

आपके लिए केतु की महादशा 18/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 23/03/2027 को प्रारंभ होकर 19/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्पर्धियों पर विजय होगी, सफल और प्रसिद्ध होंगे। संतान से सुख मिलेगा। तकनीकी कार्यों में दक्ष बनेंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप

सफल, प्रसिद्ध होंगे; उच्चपद प्राप्त करेंगे, यात्राएं होंगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, तो धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, उत्तम स्वास्थ्य, कार्यों में सफलता और शत्रुओं पर विजय का संकेत है। बड़े भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं।

आापकी संतान की शिक्षा, उत्साह और संकल्प शक्ति उत्तम होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और सफल होंगे, प्रभावशाली मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शिवजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(19/08/2027 - 06/09/2028)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 19/08/2027 को प्रारंभ होकर 06/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में लाभ होगा। साझेदारी लाभदायक रहेगी। व्यापार का अचानक विस्तार हो सकता है। विदेश व्यापार संभव है। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। लोग आपकी सहायता करेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रु आपको हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। नेतृत्वक्षमता उत्तम होगी।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध होंगे। आपके पिता को आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। माता को घरेलू सुख रहेगा। आपके भाई-बहनों को मुकदमे में जीत मिलेगी, विदेश यात्रा हो सकती है, तीर्थयात्रा संभव है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, लेखन-प्रकाशन से लाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की आय और सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र, सतनजा, उड़द की दाल दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(06/09/2028 - 13/08/2029)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 06/09/2028 को प्रारंभ होकर 13/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। निवेश से लाभ होगा। उच्चाधिकारियों और वरिष्ठ व्यक्तियों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। संतान से सुख मिलेगा। ज्ञानार्जन उत्तम होगा। सफल और समृद्ध बनेंगे। धन संचित होगा। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी, पिता से उत्तम संबंध होंगे, यात्रा होगी, किस्मत साथ देगी।

आपके जीवनसाथी को विविध माध्यमों से धनार्जन होगा। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे। माता धनी बनेंगी, उन्हें सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, शिक्षा उत्तम होगी। आपके भाई-बहनों के लिए संचार माध्यम से लाभ, लघु यात्रा और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत है। उन्हें साझेदारी से लाभ हो सकता है; विवाह संभव है।

आपकी संतान सफल और धनी होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, भाग्य साथ देगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों का लाभ अच्छा रहेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(13/08/2029 - 21/09/2030)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 13/08/2029 को प्रारंभ होकर 21/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी, संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। जिंदगी आराम से कटेगी। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र और गुप्त विद्या में रुचि हो सकती है। धनागम उत्तम होगा, धनी बन सकते हैं। भूमि और वाहन का सुख मिलेगा। प्रसिद्धि बढ़ेगी, धनागम होगा, सम्मान और पद में उन्नति होगी। इच्छाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी; उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा। माता का

धनार्जन उत्तम होगा, निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यों में बाधा, अचल संपत्ति की प्राप्ति, घर में स्थायित्व और धन का संकेत है। आपकी संतान सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी, किस्मत साथ देगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों की व्याधिओं से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- केतु - बुध
(21/09/2030 - 19/09/2031)

आपके लिए केतु महादशा 18/09/2024 को प्रांरभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 21/09/2030 को प्रारंभ होकर 19/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे; साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। साझेदारों से विचारों का आदान-प्रदान उत्तम होगा। विवाह हो सकता है। प्रसिद्ध होंगे। ज्ञान के लिए प्रशंसा होगी। कला, कविता, गणित, ज्योतिष और धर्म आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता को विभिन्न माध्यमों से धनलाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए समृद्धि, धन, यात्रा, पिता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान सफल रहेगी, कला और लेखन में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विविध माध्यमों से धनार्जन होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।